



**CHETANA**  
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal  
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor  
SJIF 2024 - 8.029



Prof. A.P. Sharma  
Founder Editor, CIJE  
(25.12.1932 - 09.01.2019)

### [Conference Special-NTMAE-24]

#### महर्षि अरविन्द घोष का सर्वांग योग एवं शैक्षिक चिंतन

मीनाक्षी शर्मा

शोधार्थी (शिक्षा विभाग), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

Email: bhardwajmeenu1883@gmail.com, Mobile: 8290886451

First draft received: 05.05.2024, Reviewed: 10.05.2024, Final proof received: 09.06.2024, Accepted: 29.06.2024

#### सारांश

महर्षि अरविन्द घोष एक महान दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री, राष्ट्रवादी, योग गुरु, पत्रकार, कवि, निबंधकार आदि थे। उन्होंने शिक्षा व योग के संबंध में जो विचार प्रस्तुत किए, वे हर युग में मूल्यवान हैं, क्योंकि उनकी शिक्षा का लक्ष्य बालक का पूर्ण विकास कर उसे समग्र मानव बनाना था। उसे मानव कल्याण की ओर अग्रसर करना था। उनका सर्वांग योग भी केवल आत्म मोक्ष व आत्म कल्याण की भावना तक सीमित ना होकर विश्व कल्याण की भावना से प्रेरित था। महर्षि अरविन्द का मानना था कि मानव सर्वांग योग व शिक्षा के माध्यम से अपना समग्र विकास कर इस सांसारिक जीवन में ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। इसका सिर्फ एक ही साधन है 'समग्र शिक्षा'।

**मुख्य-शब्द :** महर्षि, सर्वांग योग, आध्यात्मिकता, अतिमानस, अतिमानव, समग्र शिक्षा इत्यादि।

#### प्रस्तावना

आज के वैज्ञानिक युग में मानव ने भौतिक प्रगति तो कर ली लेकिन आध्यात्मिक रूप से वह बहुत पिछड़ा जा रहा है, जिसके कारण भौतिक वादी सुख-सुविधा होने के बाद भी वह सुखी नहीं है। इसका मुख्य कारण हमारी जीवन शैली है साथ ही साथ हमारे शैक्षिक उद्देश्यों में परिवर्तन है। सैद्धांतिक रूप से तो हमारी शिक्षा के उद्देश्य आदर्शोन्मुख हैं लेकिन व्यवहारिक रूप से हमारी शिक्षा का व्यवसायीकरण हो चुका है। अतः मनुष्य को अपने आन्तरिक व बाह्य विकास के लिए, भौतिक के साथ-साथ आध्यात्मिक मूख की तृप्ति के लिए एवं सारांश में कहे तो अपने सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न महान दार्शनिक व शिक्षाविदों के विचारों का अध्ययन कर सार तत्व ग्रहण करना होगा इन शिक्षाविदों में एक महत्वपूर्ण नाम हैं— महर्षि अरविन्द घोष। इनके सर्वांग योग व शैक्षिक चिन्तन का शिक्षा जगत में अपना विशेष स्थान है।

#### शोध का उद्देश्य

महर्षि अरविन्द घोष के सर्वांग योग व शैक्षिक चिन्तन से अवगत कराना।

#### महर्षि अरविन्द घोष का जीवन परिचय

महर्षि अरविन्द घोष का जन्म 15 अगस्त 1872 ई में कलकत्ता के एक धनी परिवार में हुआ था। महर्षि अरविन्द के पिता एक डॉक्टर थे, जिन पर पश्चिमी संस्कृति का विशेष प्रभाव था। अतः वह अरविन्द को भारतीय प्रभाव के परे रखते हुए अंग्रेजी शिक्षा व सभ्यता के अनुसार शिक्षित करना चाहते थे। इसके लिए मात्र 7 वर्ष की आयु में ही उन्हें दोनों भाईयों के साथ इंग्लैण्ड भेज दिया। अरविन्द प्रखर बुद्धि के होने के कारण I.P.S.C. की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली किन्तु वे अंग्रेजी सरकार के अफसर नहीं बने। पिता डॉ. कृष्ण घोष भारत में रहते हुए अपने पुत्रों को बंगाली पत्र में छपे भारतीय के प्रति दुर्व्यवहार का विवरण काटकर भेजा करते थे, जिसमें ब्रिटिश सरकार के द्वारा भारतीयों के शोषण की कहानियाँ होती थीं। इन समाचार पत्रों के अंशों (कटिंग पेपर) का श्री अरविन्द के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे विदेश में रहते हुए भी उनका मन व मस्तिष्क मातृभूमि से दूर ना हो सका। देश को आजाद कराने की भावना के बीज उनके इंग्लैण्ड में ही अंकुरित हो चुके थे। सन 1891 में कैम्ब्रिज में 'इण्डियन मजलिस' की स्थापना हुई जिसमें अरविन्द व उनके दोनों भाई शामिल हुए। आजादी सम्बन्धी विचारों को आगे बढ़ाने में अरविन्द को अनेक यूरोपियन स्वतन्त्रता आंदोलनों व उनके नेताओं से प्रेरणा मिली।

सन 1893 में अरविन्द स्वदेश लौटे। उन्होंने 13 वर्ष तक बड़ौदा राज्य की सेवा की 13 वर्ष बाद देश सेवा के लिए नौकरी को इस्तीफा दे राजनीति में प्रवेश किया। उन्होंने 'इन्द्र प्रकाश' पत्र, विपिन चन्द्र पाल की 'वन्देमातरम्' पत्रिका में राजनैतिक लेख लिखे जो उग्र लेख थे। एक अंग्रेजी अधिकारी किंग्सफोर्ड पर हमले की वारदात के सिलसिले में 4 मई 1908 को अरविन्द को भी गिरफ्तार कर लिया गया। जमानत छूटने से उन्होंने मना कर दिया। यहाँ उन्हें 10 साल का कठोर कारावास मिला। इसी दौरान अलीगढ़ जेल में उन्होंने अतिमानस तत्व का अनुभव किया। इस अनुभव के पश्चात् अरविन्द घोष का जीवन ज्यादातर योग व साधना में ही बीता।

अतः सन् 1926 में पाण्डिचेरी में उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की। यहीं उन्होंने 24 वर्षों तक सर्वांग योग की साधना की। 40 वर्षों तक यहाँ महर्षि अरविन्द ने महाकर्मयोगी, आध्यात्मिक नेता एवं सर्वांगयोगी के रूप में कार्य करते हुए 5 दिसम्बर, 1950 को महासमाधि में लीन हो गए।

#### महर्षि अरविन्द की सर्वांग योग साधना

भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में समय - 2 वर अनेक योग साधना का आविष्कार हुए जैसे ज्ञानयोग, कर्मयोग, हठयोग, राजयोग, शक्तियोग आदि परन्तु इनके नियम व प्रक्रिया विधि इतनी कठिन हैं कि इन्हें गृहस्थ जीवन यापन करने वाला व्यक्ति आसानी से नहीं कर सकता। महर्षि अरविन्द घोष ने एक ऐसा योग मार्ग बताया जिसे मनुष्य गृहस्थ जीवन में भी आसानी से कर सकता है, वह योग है 'सर्वांग योग'। सर्वांग योग अर्थात् पूर्ण योग वह सर्वांग साधना प्रणाली है जिसमें सांसारिक जीवन व आध्यात्मिक जीवन के बीच सर्व विजयी सामंजस्य स्थापित हो सकें अर्थात् जीवन को बिना खोये भगवान को प्राप्त करना, मानव जीवन के भीतर 'भगवान व प्रकृति का पुनर्मिलन स्थापित करना। यह योग मानव को पूर्णता प्रदान करता है अर्थात् मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित किसी भी अंश का त्याग ना करके मनुष्य के अन्दर निहित भगवत् सत्ता के दृढ़ आधार पर समाज का महान भवन तैयार करना। पुराने सभी योग आत्मकेन्द्रित थे, स्वयं की मोक्ष प्राप्ति ही उनका मूल उद्देश्य था लेकिन सर्वांग योग केवल अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए प्रयास नहीं करता वरन् विश्वात्मा भगवान के अन्दर समस्त मानव समाज को पूर्णत्व प्रदान करना चाहता है सर्वांग योग केवल अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए ही प्रयास नहीं करता, वरन् विश्वात्मा भगवान के अन्दर समस्त मानव - समाज को पूर्णत्व प्रदान कराना चाहता है वह केवल अपनी स्वार्थयुक्त मुक्ति ही नहीं चाहता बल्कि मानवता के भीतर भगवान की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रयास करता है।

## महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक विचार

महर्षि अरविन्द ने अपने दार्शनिक सिद्धान्त प्रस्तुत किए लेकिन इन सिद्धान्तों को व्यवहार में लाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता अनुभव हुई। उन्हें तात्कालीन शिक्षा उपयुक्त नहीं लगी इसलिए उन्होंने 'नेशनल सिस्टम ऑफ एजुकेशन' और 'ऑफ एजुकेशन' में शिक्षा की राष्ट्रीययोजना सम्बन्धी विचार प्रस्तुत प्रस्तुत किए।

### शिक्षा का सम्प्रत्यय

महर्षि अरविन्द के अनुसार शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान, चरित्र और संस्कृति को जागृत करती है।

एक ऐसी शिक्षा जो बालक का भौतिक, प्राणिक, मानसिक अन्तरात्मिक व आध्यात्मिक विकास करें, सम्पूर्ण (समग्र) शिक्षा कहलाती है। महर्षि अरविन्द भारतीय परम्परा के अनुरूप शिक्षा पद्धति चाहते थे उन्होंने शिक्षा द्वारा पुनर्जागरण का संदेश दिया, ये पुनर्जागरण तीन दिशाओं में उन्मुख होना चाहिए।

1. प्राचीन आध्यात्म ज्ञान की पुनर्स्थापना करना।
2. इस आध्यात्म ज्ञान का दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान और विवेचनात्मक ज्ञान में प्रयोग करना।
3. वर्तमान समस्याओं का भारतीय आत्म ज्ञान की दृष्टि से समाधान खोजना और आत्मा प्रदान समाज की स्थापना करना।

### शिक्षा के उद्देश्य

महर्षि अरविन्द के अनुसार शिक्षा के दो प्रमुख कार्य हैं –

1. मानव को अपने स्वयं के विकास क्रम (आध्यात्मिक) का स्पष्ट ज्ञान कराना।
2. मानव में सत् तक पहुँचने की शक्ति का विकास करना।

महर्षि अरविन्द अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसके द्वारा मानव का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक व आध्यात्मिक विकास हो सके अर्थात् एक ऐसी एकीकृत शिक्षा हो जो व्यक्तित्व के सभी पक्षों को सामंजस्यपूर्ण रूप से एकीकृत कर समग्र विकास कर सके।

### पाठ्यचर्या व शिक्षण विधियाँ

महर्षि अरविन्द ने मानव के समग्र विकास की बात की है अतः

- **शारीरिक विकास हेतु** – खेल, योग, अन्य शारीरिक गतिविधियाँ जिससे शारीरिक स्वास्थ्य व शक्ति का विकास हो।
- **मानसिक विकास हेतु** – ज्ञान, तर्क व समीक्षात्मक विचार द्वारा मस्तिष्क संवर्धन पर बल।
- **भावात्मक विकास हेतु** – ऐसी गतिविधियों व विषयवस्तु को बढ़ावा जिससे साहस, प्रेम, करुणा जैसी भावनाओं का विकास हो सके तथा जीवन में आने वाली चुनौतियों से सामना करने तथा उन पर नियन्त्रण पाने की इच्छाशक्ति का विकास हो सके।
- **आध्यात्मिक विकास हेतु** – इस हेतु आन्तरिक शान्ति, आध्यात्मिक जागरूकता जैसे आन्तरिक गुण का संवर्धन शामिल है।

इस प्रकार महर्षि अरविन्द ने पाठ्यक्रम में विज्ञान मानविकी, कला और आध्यात्मिक अध्ययन सहित अनेक विषय शामिल हैं।

शिक्षण विधियाँ बाल केन्द्रित व्यवहारिक गतिविधियाँ होनी चाहिए जिसमें बालक की व्यक्तिगत भिन्नताओं का भी ध्यान रखना चाहिए।

### शिक्षक-शिक्षार्थी

महर्षि अरविन्द के अनुसार, शिक्षक की भूमिका केवल पथ प्रदर्शक या सुविधाप्रदाता मात्र होनी चाहिए। शिक्षक को शिक्षार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं रुचियों व क्षमताओं की गहन समझ होनी चाहिए जिससे वह बालकों को एक ऐसा वातावरण दे सके जहाँ बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। शिक्षण शिक्षार्थी के लिए एक रोल मॉडल होना चाहिए जिसमें सत्य निष्ठा, करुणा व ज्ञान के गुण हों।

शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षार्थी न केवल ज्ञान का एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होना चाहिए बल्कि अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार होना चाहिए। बालक का प्रथम लक्ष्य अपनी पूरी क्षमताओं का विकास करना तथा पूर्ण व एकीकृत विकसित मानव बनना होना चाहिए।

### निष्कर्ष

महर्षि अरविन्द घोष ने एक ऐसी शिक्षा नीति बताई जिससे मानव के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू के विकास पर जोर दिया है क्योंकि महर्षि अरविन्द के अनुसार शिक्षा वास्तव में आत्म खोज व आत्म साक्षात्कार की एक प्रक्रिया है जहाँ उसकी पूरी क्षमताओं को विकसित कर एक पूर्ण व एकीकृत मानव बनने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

साररूप में महर्षि अरविन्द की शिक्षा के पांच सिद्धान्त हैं –



बालक के सर्वांग विकास करने में एक महत्वपूर्ण पहलू है – 'सर्वांग योग'। महर्षि अरविन्द के सर्वांग योग का लक्ष्य केवल आत्म मोक्ष व आत्मकल्याण ही नहीं है बल्कि यह तो केवल प्रथम व गौण लक्ष्य है, अन्तिम लक्ष्य तो मानव कल्याण है। महर्षि अरविन्द घोष के सर्वांग योग व शैक्षिक चिन्तन सम्बन्धी विचार वर्तमान युग में भी प्रासंगिक व साध हैं।

### सन्दर्भ सूची

- मदानपूनम, पाण्डेय रामशकल (2015) समसामयिक भारत और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- घोष अरविन्द – 'दा सिन्धिसिस ऑफ योगा' एडिसन नेवस्ट कलकत्ता
- घोष श्री अरविन्द – 'दिव्य जीवन', अनुवादक श्यामसुन्दर झुनझुनवाला प्रकाशन श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी – 2
- कुमार संदीप (2017) 'स्वामी विवेकानन्द तथा श्री अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन का विवेचनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान काल में उसकी उपयोगिता का मूल्यांकन, पी.एच.डी. साई नाथ विश्वविद्यालय, झारखण्ड
- दास. पी. के (2020) एजुकेशनल फिलोसोफी एण्ड क्रन्ट्रबुशन ऑफ श्री अरविन्दों टू दा फिल्ड ऑफ एजुकेशन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रियेटिव रिसर्च थॉट्स 8(7)
- अग्निशिखा, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी
- अग्रवाल पावक व मिश्र लक्ष्मी
- स्टडी ऑफ एजुकेशनल एण्ड फिलॉसफीकल थॉट ऑफ अरविन्द घोष एण्ड इट्स रिवेलन्स इन प्रजेन्ट एजुकेशनल सिनोरियो उत्तरपाड़ा भाषण (30 मई 1909), पीएच.डी छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश
- श्री अरविन्द सोसायटी, जयपुर शाखा, राजस्थान
- rashtriyashiksha.com/contributions of shri-aurobindo
- अखण्ड ज्योति (ऑल वर्ड गायत्री परिवार) जनवरी 1960 वर्जन 2 (पाण्डेय श्री जीवन दत्त)